• वास्तु...

सेप्टिक टैंक और वाटर टैंक...

वास्तु शास्त्र में जल निकासी प्रबंधन अर्थात ड्रेनेज सिस्टम, सेप्टिक टैंक और वाटर टैंक का विस्तार से वर्णन है। शौचालय के गंदे पानी को इकट्ठा करने के लिए सेप्टिक टैंक की व्यवस्था करनी पड़ती है। ऐसे में सवाल है कि नई जीवनशैली में वास्तु को किस तरह से समायोजित किया जा सकता है। सेप्टिक टैंक की सबसे उत्तम दिशा पश्चिमोत्तर (वायव्य), पश्चिम,दक्षिण और अग्नि कोण है। सबसे अच्छी दिशा वायव्य होती है। इस दिशा में सेप्टिक टैंक बनाने से घर में कोई वास्तु दोष उत्पन्न नहीं होता है। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उत्तर-पश्चिम में द्वार के सामने या द्वार के अंदर सेप्टिक टैंक होना नहीं चाहिए क्योंकि उसके ऊपर से गुजर कर आने वाला व्यक्ति हमारे लिए शुभ नहीं होता। मुख्य द्वार से दाएं-बाएं सैप्टिक टैंक बनाना श्रेयस्कर रहता है।

पश्चिम दिशा भी सैप्टिक टैंक के लिए शुभ है। दक्षिण और

दक्षिण पूर्व दिशा क्रमश: सेफ्टी टैंक का विकल्प हैं, यद्यपि वहां सेप्टिक टैंक शुभ नहीं माना जाता। किंतु दक्षिण या दक्षिण पूर्व में यह टैंक बनाना ज्यादा हानिकारक भी नहीं है। ध्यान यह रहे कि दक्षिण अथवा दक्षिण पूर्वी दीवार से मिलाकर सेप्टिक टैंक का निर्माण न करें। दक्षिणी दीवार से कम से कम 3 से 4.5 फुट तक की जगह छोड़कर सेप्टिक टैंक का निर्माण करें। सेप्टिक टैंक के ऊपर कोई कमरा,रसोई का निर्माण नहीं करना चाहिए।

दक्षिण-पश्चिम अर्थात नैऋत्य कोण में सेप्टिक टैंक बनाना बहुत ही हानिकारक है क्योंकि यह दिशा ऊंची और भारी होनी चाहिए। इसलिए वहां पर सीवर का गड्ढा होने से गृह स्वामी के लिए बहुत ही हानिकारक है। यदि आपके घर में सेफ्टी टैंक गलत दिशा में बना हुआ है तो उसके ढक्कन को नीचे की ओर तांबे की प्लेट से कवर कर दें और उसके ऊपर हरे पौधों के गमले रखे दें। इससे वास्तु दोष कुछ सीमा तक कम हो जाएगा।

स्वच्छ वॉटर टैंक : स्वच्छ वाटर टैंक पीने के पानी का संग्रह करने के लिए होते हैं। ऐसे भूमिगत वाटर टैंक के लिए केवल तीन ही दिशाएं श्रेष्ठ मानी गई है। उत्तर दिशा उत्तर-पूर्व दिशा और पूर्व दिशा। इसी दिशा में ही पीने के पानी का अंडर ग्राउंड टैंक होना चाहिए।

• शुभ दिन...

कार्तिक पूर्णिमा...

कार्तिक माह को हिंदू धर्म का पवित्र माह कहा गया है। कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान-दान की शुरुआत देवउठनी एकादशी से हो जाती है। इस दिन से मांगलिक कार्य आरंभ हो जाते हैं। पुराणों में वर्णन है कि इसी दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर नामक राक्षस का वध किया था। उसके वध की खुशी में देवताओं ने इसी दिन दीपावली मनाई थी। जिसे देव दीपावली भी कहा जाता है। कार्तिक पूर्णिमा पर दीपदान की परंपरा भी है। मान्यता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन पवित्र नदियों में स्नान करने से पुण्य प्राप्त होता है। शुभ और मांगलिक कार्यों की शुरुआत के लिए भी कार्तिक पूर्णिमा का दिन बेहद अच्छा माना जाता है।

कार्तिक पूर्णिमा आरंभ- 29 नवंबर 2020, रात 12:47 बजे से

कार्तिक पूर्णिमा समाप्त- 30 नवंबर 2020, रात 02:59 बजे तक

इस बार 29 नवंबर की रात्रि में पूर्णिमा तिथि लगने के कारण 30 नवंबर को दान-स्नान किया जाएगा। कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। इस बार कार्तिक पूर्णिमा पर सर्वार्थसिद्धि योग व वर्धमान योग बन रहे हैं। इस योग के कारण कार्तिक पूर्णिमा का महत्व और भी बढ़ जाता है। ऐसी मान्यता है कि कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा में या तुलसी के पास दीप जलाने से महालक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

कार्तिक पूर्णिमा पर सर्वार्थ सिद्धि योग में स्नान दान का संयोग बन रहा है। सनातन धर्म के लिए पुण्यकारी मास कहा जाने वाले कार्तिक मास में पूर्णिमा का महत्व ग्रह और नक्षत्र से बढ़ गया है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान के बाद दीप–दान करना दस यज्ञों के समान फलदायक होता है।

कार्तिक पूर्णिमा देवों की उस दीपावली में शामिल होने का अवसर देती है, जिसके प्रकाश से प्राणी के भीतर छिपी तामसिक वृत्तियों का नाश होता है। विद्वानों का कहना है कि त्रिपुरासुर नाम के दैत्य के आतंक से तीनों लोक भयभीत थे...

मंगलवार को भरणी नक्षत्र और सर्वार्थ सिद्धि योग के साथ ग्रह-गोचरों के शुभ संयोग में मनाई जाएगी। भारतीय संस्कृति में कार्तिक पूर्णिमा का धार्मिक एवं आध्यात्मिक माहात्म्य है। कार्तिक पूर्णिमा को काशी में देवताओं की दीपावली के रूप में मनाया जाता है। इस दिन कई धार्मिक आयोजन, पवित्र नदी में स्नान, पूजन और दान का विधान है।

पूर्णिमा तिथि पर स्नान और दान से भगवान विष्णु की अपार कृपा बरसती है। मान्यता है कि इस तिथि पर गंगा स्नान से पापों से मुक्ति मिलती है और काया भी निरोगी रहती है। सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है। इसी दिन भगवान विष्णु ने अपना पहला अवतार मत्स्य अवतार के रूप में लिया था। अखण्ड दीप दान करने से दिव्य कान्ति की प्राप्ति होती है साथ ही जातक को धन, यश, कीर्ति में भी लाभ होता है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान के बाद दीप-दान करना दस यज्ञों के समान फलदायक होता है। कार्तिक पूर्णिमा देवों की उस दीपावली में शामिल होने का अवसर देती है, जिसके प्रकाश से प्राणी के भीतर छिपी तामसिक वृत्तियों का नाश होता है।

विद्वानों का कहना है कि त्रिपुरासुर नाम के दैत्य के आतंक से तीनों लोक भयभीत थे। उसने स्वर्ग लोक पर भी अधिकार जमा लिया था। त्रिपुरासुर ने प्रयाग में काफी दिनों तक तप किया था। उसके तप से तीनों लोक जलने लगे। तब ब्रह्मा जी ने उसे दर्शन दिया, त्रिपुरासुर ने उनसे वरदान मांगा कि उसे देवता, स्त्री, पुरुष, जीव, जंतु, पक्षी, निशाचर न मार पाएं। इसी वरदान से त्रिपुरासुर अमर हो गया और देवताओं पर अत्याचार करने लगा। कार्तिक पूर्णिमा के दिन महादेव ने प्रदोष काल में अर्धनारीश्वर के रूप में त्रिपुरासुर का वध किया था।

इस पूर्णिमा का महत्व

कहा जाता है कि इस पूर्णिमा तिथि पर ही भगवान शिव ने राक्षस त्रिपुरासुर का वध किया था। इसलिए इस दिन को त्रिपुरी पूर्णिमा कहा जाता है। इस दिन चंद्रोदय के समय शिव जी और कृतिकाओं की पूजा करने से भगवान शंकर जल्द प्रसन्न होते हैं। इसके साथ ही इस दिन दीप दान का विशेष महत्व है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन ही संध्या काल में भगवान विष्णु का मत्स्यावतार हुआ था। इसलिए इस दिन विष्णु जी की पूजा भी की जाती है। इस दिन गंगा स्नान के बाद दीप दान का पुण्य फल दस यज्ञों के बराबर होता है।

गंगा स्नान के बाद जरूरतमंदों को दान करना चाहिए। इस दिन मौसमी फल, उड़द दाल, चावल आदि का दान शुभ होता है।

• भूलकर भी...

ये काम न करें...

आप शुभ या अशुभ में विश्वास न भी रखते हो लेकिन आपको इस बात को तो मानना ही पड़ेगा कि दुनिया में नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जा होती है, जो हमारे जीवन को प्रभावित करती है। ऐसे में इस नकारात्मक ऊर्जा को नियंत्रित करके सकारात्मकता फैलाने के लिए वास्तुशास्त्र में कुछ उपाय बताए गए हैं, जिसका ध्यान रखने पर आपके घर में सुख-शांति रहने के साथ आर्थिक परेशानी नहीं आती। अनजाने में हम ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जिससे नकारात्मक ऊर्जा घर में हावी हो जाती है और हमारे जीवन में उथल-पुथल हो जाती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि हम जल्दबाजी में किचन में दवाई रखकर भूल जाते हैं, जबकि वास्तु के हिसाब से यह आदत बिल्कुल भी अच्छी नहीं है। ऐसा करने से बचें। आपको भगवान या कोई दूसरी मूर्ति दक्षिण दिशा में नहीं रखनी चाहिए। ऐसा करने से आय कम होती है और खर्चों में बढ़ोत्तरी होती है। बाथरूम और टॉयलेट के दरवाजें हमेशा बंद करके रखें, वहीं इनके दरवाजे बंद करते समय ज्यादा आवाज भी नहीं करनी चाहिए। आपको घर में कांटेदार पौधे लगाने से बचना चाहिए। ऐसा करने से जीवन में सुख-शांति भंग होती है। जिस कमरे में आपने कीमती सामान रखा है, वहां झाड़ू रखने से परहेज करें।

• राशि परिवर्तन...

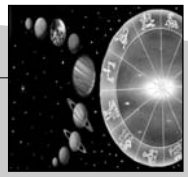

बुध ग्रह 28 नवंबर को तुला राशि से निकलकर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। इसके बाद दिसबंर में दोबारा से बुध अपनी राशि बदलेंगे। 17 दिसंबर को यह 11 बजकर 26 मिनट पर धनु राशि में प्रवेश करेंगे। वृषभ राशि वालों के लिए परिवर्तन अच्छा है। जो व्यवसाय या साझेदारी के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं उन्हें यह समय अच्छा मुनाफा दे सकता है। कर्क राशि वालों के लिए बिजनेस और व्यापार की दृष्टि से देखें तो यह परिवर्तन बहुत खास है। इस राशि के लोगों को नौकरी और व्यापार में लाभ होगा। पढ़ाई करने वालों के लिए भी यह भी परिणाम बहुत अच्छा है।